संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-9

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

धर्म (Religious)

संगम काल में धर्म के सभी रूप मिलते हैं| यहां पर समन्वय के तत्व मिलते हैं| यहां पर उत्तर की तरह आर्य दस्यु संघर्ष नहीं मिलते है| यहां पर पुनर्जन्म, वीरपूजा, पितृपूजा तथा सती पूजा का संपूर्ण दर्शन मृत्यु से संबंधित है| जीवात्मा तमिल धर्म का अंग है| इसमें प्रस्तर, जल, नक्षत्र तथा ग्रहों की पूजा शामिल थी|

दक्षिण में वैदिक धर्म का भी प्रचार हो चुका था| आगस्त्य ही तरह कौडिन्य ऋषि का भी दक्षिण भारत से पर्याप्त संबंध था| पांड्य राज्यों के पुरोहित अगस्तय गोत्र के ब्राह्मण होते थे| तमिल व्याकरण की उत्पत्ति अगस्तय से माना जाता है| दक्षिण में अगस्तेश्वर नाम का मंदिर भी मिला है, जहां पर शिव मूर्ति स्थापित है| पुरुनानरू तथा तोल्कापियम के अनुसार अगस्तय का संबंध द्वारका से था|

संगम काल में बौद्ध और जैन धर्म का विकास भी हुआ| मणिमेखले और शिल्पादीकारम महाकाव्यों से जैन व बौद्धों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है| चंद्रगुप्त मौर्य का दक्षिण जाने का उल्लेख भी इसका प्रमाण है| संप्रति को श्वेतांबर दीक्षा देने वाला आचार्य सुहास दक्षिण का ही था|

तमिल देवताओं में मुरुगन सबसे महत्वपूर्ण था| बाद में मुरुगन का नाम सुब्रमण्यम भी मिलता है और स्कन्द कार्तिकेय से इस देवता का एकीकरण हो गया| कार्तिकेय को अनेक नामों से पुकारा जाता है| मुरुगन का दूसरा नाम वेलन है| वेलन का संबंध वेल से है जिसका अर्थ है बधी| मुर्गन का प्रतीक मुर्गा था|

स्पष्ट है कि दक्षिण भारत में कृष्णा नदी के आस-पास के क्षेत्र में व्यापारियों, जैन, बौद्ध और ब्राह्मण धर्म प्रचारकों और विजेता लोगों के बसने से एक नवीन भौतिक संस्कृति का उदय हुआ, जिसे संगम संस्कृति कहते है| इसमें तीन राज्यों चोल, चेर व पाण्ड्य का उल्लेख मिलता है| इसके बारे में जानकारी पुरातात्विक वस्तुएं एवं साहित्यिक ग्रंथो से होती है|